अमर ज्योतियाँ

संसार में जब धर्म का नाश होना शुरू हो जाता है, मानवीय मूल्यों, आदर्शों के विपरीत धक्काशाही, ज़ोर जबरदस्ती, मजहबी ईर्ष्या, राजसी अन्याय, सामाजिक घृणा, अभिमान, मायिक शक्ति में बेहोशी, समाज में, राजनीतिक वातावरण में प्रवेश कर जाती है, उस समय राजा कसाई बन जाता है। उसके राज्य में धर्म नहीं रहता। गुरू महाराज जी फ़रमान करते हैं -

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ।
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ॥ पृष्ठ - 145

जैसे जैसे अत्याचारों में वृद्धि होती है अज्ञान का घटाटोप अन्धेरा छा जाता है, मनुष्य की बुद्धि पशुओं के स्तर से भी नीचे गिर जाती है, उस समय सत्य असत्य, धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय का ज्ञान मनुष्य के अन्दर से निकल कर अन्धकार में खो जाता है। उसकी पीड़ा करोड़ों ब्रह्मण्डों के मालिक तक पहुँचती है, उस समय वह अपने परम अस्तित्व में से अपना ही रूप प्रकट करके खण्डों, ब्रह्मण्डों में भेजता रहता है जिसने शरीरधारी

होकर इस अज्ञान तथा जुल्म का नाश करना होता है। यदि रोग बढ़ जाये और समाज के शरीर में फैलना शुरू हो जाए उस समय योग्य डाक्टर यह उचित समझता है कि शरीर में से वे अंग काट दिए जायें जिन पर रोग का प्रभाव पड़ चुका है। जैसे कैंसर होने पर शरीर का वह अंग काट दिया जाता है, इसी प्रकार जब समाज में घटित हो रहे प्रकाश में अन्धकार छा जाता है, उस समय गुरू, पीर, अवतार, पैगम्बर, महापुरुष प्रभु द्वारा प्रेरित हुक्म में रहते हुए समाज तथा राजसी शक्तियों का मार्ग दर्शन करने के लिए अनेक विधियाँ अपनाते हैं। कहीं तो अपनी मानसिक शक्तियों का प्रयोग करके होश में लाने पड़ते हैं, कहीं पर शस्त्रों का प्रयोग करके ला-इलाज अन्धकार से घिरे हुए मनमुख वजूदों को समाप्त करना पड़ता है, कहीं प्यार तथा प्रेम के उपदेश देकर उनके अन्दर से अन्धकार का नाश, गुरू पीर होकर किया जाता है। इस प्रकार जैसी आवश्यकता होती है प्रभु वैसी ही हस्ती गुरू रूप में, अवतार रूप में, पैगम्बर रूप में संसार में भेजते रहते हैं।

गुरू दशमेश पिता जी (गुरू गोबिन्द सिंह जी) ने संसार में अपने प्रकट होने के बारे में बताते हुए फ़रमान किया है कि प्रभु ने उन्हें एक विशेष मिशन दिया और हुक्म दिया कि जिस धर्म का रास्ता निरोल, खालिस, भेषों-भ्रमों से निस्पृह, नफरत, ईर्ष्या, वैर, विरोध, काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार, निन्दा, चुगली आदि से पवित्र, न्यारा नरोया है, उस समाज की संरचना के लिये भेजा है। गुरू महाराज जी हमें ज्ञान देते हुए फ़रमान करते हैं कि अकाल पुरुष के हुक्म के अनुसार यह फ़रमान हुआ है कि मैं आपको अपने पुत्र का स्थान, दर्जा देकर, विशेष मिशन की पूत हेतु भेज रहा हूँ। भारत वर्ष में सात आठ सौ वर्षों से अन्याय तथा अत्याचारों की पीड़ा बढ़ती ही जा रही है। आततायी शासक विदेशों से आकर भारत के नर नारियों को पैरों तले कुचल रहे हैं। न तो भारतीय नारी का कोई आदर है और न ही भारतीय पुरुष को सुख चैन से सांस लेने के लिये स्थान मिलता है। उनके पूजा स्थलों को गिरा कर, लाखों दिलों को तोड़ दिया जाता है। यह सब मज़हब के नाम पर किया जाता है, मज़हब के नाम पर पाप को पुण्य बनाया जाता है। इस घोर अन्धकार में फंसे हुए जीव, श्वांस और सत खो चुके हैं, उनमें कोई साहस ही नहीं रहा, भय के वातावरण में इतने नीचे चले गये हैं कि वे अपने गौरव को भूल चुके हैं। प्रभु ने कहा कि मैं तुम्हें संसार में भेज रहा हूँ ताकि तुम सत का मार्ग प्रचलित करो और धर्म के नाम में मिली हुई अन्धकारमयी सोच को दूर करो। जुल्म ने यह भी पहचान खत्म कर दी कि बुद्धि क्या है, दुर्बुद्धि क्या है? दुर्बुद्धि को अपनाकर इन्सान दुखी हो रहा है। गुरू महाराज जी प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! मैंने ध्यान लगाकर देखा है कि

सारी सृष्टि जल रही है, अन्धकार छा चुका है और यह धर्म का मार्ग, जिसे आत्म मार्ग कहा जाता है, यह तभी चल सकता है यदि स्वंय शक्ति देने वाला सहायक पवित्र हाथ मेरी पीठ पर रखें। आपने मुखारविन्द से इस प्रकार कहा है –

मै अपना सुत तुहि निवाजा। पंच प्रचुर करबे कउ साजा।
जहा तहा तै धरमु चलाइ। कबुधि करन ते लोक हटाइ॥
अकाल पुरख बाच। चौपई
कबि बाच॥ दोहरा॥
ठाढ भयो मै जोरि कर, बचन कहा सिर निआइ।
पंथ चलै तब जगत मै, जब तुम करहु सहाइ।

गुरू महाराज जी अपना लक्ष्य संसार को बताते हुए फ़रमान करते हैं कि मुझे इसी उद्देश्य हेतु संसार में भेजा गया है, मेरा किसी के साथ कोई वैर नहीं, सभी के साथ मेरा प्यार है, मुझे ऐसा मत समझना कि मैं परमात्मा बनकर संसार में आया हूँ, वह पारब्रह्म परमेश्वर, अगम अगोचर है, इकाई रूप में मैं उसका दास हूँ, इसलिये यह गलती मत कर बैठना कि तुम मुझे ही परमेश्वर समझ लो। परमेश्वर अगम है, अगोचर है, निराला है, उसका पारावार नहीं पाया जा सकता। वह सभी जगह परिपूर्ण है और सभी के अन्दर घट घट में वास रखता है, वह अखण्ड ज्योति है। मैं उसका दास हूँ। इस बात पर किसी प्रकार का भी संशय मन में मत लाना। ऐसे समझ लो कि मैं उस धर्म पुरुष का दास संसार में उसके हुक्म को पालन करवाने के लिए देहधारी हुआ हूँ। मैंने जगत का तमाशा देखना है और सत्य की जीत असत्य की हार मेरा कार्य है। आपने फ़रमान किया है –

चौपई। इह कारनि प्रभ मोहि पठायो।
तब मै जगत जनम धरि आयो।
जिम तिन कही तिनै तिम कहि हों।
अउर किसू ते बैर न गहि हों। ३१।
जो हम को परमेसर उचरि हैं।
ते सभ नरक कुंड महि परि हैं।
मो को दास तवन का जानो।
या मै भेद न रंच पछानो। ३१।
मै हो परम पुरख को दासा।
देखन आयो जगत तमासा। ३२।
जो प्रभ जगति कहा सो कहि हों।
म्रित लोक ते मोन न रहि हों। ३३।

इसलिये इस जगत में यह कार्य करने के लिए मैंने शरीर धारण किया है, दोनों तरह से मेरा कार्य चलेगा। प्यार तथा प्रेम से, वैराग, भक्ति तथा

ज्ञान के उपदेश देकर मनुष्य के अन्दर से अन्धकार मिटा दूँगा और उसे ज्ञान प्रदान किया जायेगा कि तू शरीर नहीं है, तू प्राण नहीं है, मन नहीं है, बुद्धि नहीं है, चित्त नहीं है और न ही तू जीव है, तू वाहिगुरू की अंश है, उसी एक ही आत्मा की अखण्ड ज्योति है, उसे अपने आप की पहचान बताई जायेगी। जिस शरीर में अज्ञान तथा बुराईयों का असाध्य रोग, जिसका कोई भी इलाज न होता हो तथा शरीर महा अन्धकार में ग्रसित हो चुका हो, उसे संसार मंच में से युद्ध द्वारा नया शरीर धारण करने के लिये आगे चलाया जायेगा। सो मुझे ऐसा मत समझना कि मैं किसी के पूर्व धर्म से प्रेरित होकर कुछ करूंगा। मैं प्रभु द्वारा सौंपा गया कार्य सभी सम्प्रदायों और मज़हबों से ऊपर उठकर निषपक्ष होकर पूर्ण करूंगा। अपने बारे में बताते हुए फ़रमान करते हैं –

कहिओ प्रभू सु भाखि हों। किसू न कान राखि हों।
किसू न भेख भीज हों। अलेख बीज बीज हों। ३४।
पखाण पूज हों नहीं। न भेख भीज हों कहीं।
अनंत नामु गाइ हों। परम पुरख पाइ हों। ३५।
जटा न सीस धारि हों। न मुंद्रका सुधारि हों।
न कान काहू की धरों। कहिओ प्रभू सो मै करों। ३६।
भजों सु एक नामयं। जु काम सरब ठामयं।
न जाप आन को जपो। न अउर थापना थपो। ३७।
बिअंत नाम धिआइ हों। परम जोति पाइ हों।
न धिआन आन को धरों। न नाम आन उचरों। ३८।
तवक नाम रत्यं। न आन मान मत्यं।
परम धिआन धारयं। अनंत पाप टारयं। ३८।
तुमेव रूप राचियं। न आन दान माचियं।
तवक नाम उचारिअं। अनंत दुख टारयं। ४०।

दुष्टों और दोषियों को मैं पकड़ कर पछाडूंगा भी, धर्म के मार्ग पर भी चलाऊँगा और असाध्य अन्धकारमयी स्थिति वाली दुष्टता को जड़ से उखाड़ूँगा। इस प्रकार बहुत बड़ा उत्तरदायित्व लेकर गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज संसार में प्रकट हुए।

आपके जीवन पर यदि हम विचार करें तो उपयुर्क्त वर्णन में बताई गईं सारी बातें आसानी से समझ में आ जायेंगी। आपने एक ऐसे समाज का संसार में निर्माण किया जो निरोल खालसा था, उसमें कोई भ्रम तथा भूल नहीं थी, न ही कोई मिलावट थी, आपने फ़रमान किया कि अपने आत्म स्वरूप को पहचान कर, उसका आनन्द लूटना अपने अस्तित्व को उस आत्म अस्तित्व में लीन करना तथा सत्य आचार व्यवहार अपनाना, यह खालसा जीवन का प्रत्यक्ष रूप होगा और उसकी महानता इतनी उच्च होगी

कि उसकी महिमा को देवी देवता भी नहीं जान पायेंगे। देव लोक के प्रमुख देव उसके संग की लालसा किया करेंगे जैसे कि -

वरतणि जा कै केवल नाम।
अनद रूप कीरतनु बिस्राम।
मित्र सत्रु जा कै एक समानै।
प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै॥
कोटि कोटि अघ काटनहारा।
दुख दूरि करन जीअ के दातारा।
सूर बीर बचन के बली।
कउला बपुरी संती छली॥
ता का संगु बाछहि सुर देव।
अमोघ दरसु सफल जा की सेव।
कर जोड़ि नानकु करे अरदासि।
मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि॥ *पृष्ठ - 392*

साध की सोभा साध बनि आई।
नानक साध प्रभ भेदु न भाई॥ *पृष्ठ - 272*

और आप फ़रमान करते हैं -

आतम रस जिह जानही सो है ख़ालस देव॥
प्रभ महि मो महि तास महि रंचक नाहन भेव॥

सरब लोह ग्रंथ में से

आपका जीवन एक महान संग्राम का जीवन है क्योंकि अन्धकार के पथराये हुए तथा मूच्छत हुए जीवों को जगाना अति कठिन था, दूसरी ओर अधर्म की ताकतें, धर्म की आवाज़ को मिटा देने पर तत्पर थीं। इसकी और अधिक व्याख्या करने पर बहुत विस्तृत वर्णन हो जायेगा सो संक्षेप में इस प्रकार है कि उस समय अलग अलग सम्प्रदायों में अत्याधिक वैर भाव था और कट्टरपन इतना अधिक था कि अपने से विपरीत निश्चय वाले मनुष्य को मनुष्य ही नहीं समझा जाता था। उसका वध कर देना, उसका घर बार लूट लेना, स्त्रीयों का अपमान कर देना, बच्चों को गुलाम बना लेना, एक पुण्य कार्य समझा जाता था। इस अधर्म के अन्धकार को पैदा करने वाले पश्चिम से आने वाले बादशाह अमराव, मन्त्री, काज़ी, मौलवी थे। उन्होंने धर्म की परिभाषा अपने हितों के अनुसार बना ली और हर पाप को पुण्य कह कर अति पुण्य करने वाले कहलाते थे। गुरू दशमेश पिता जी द्वारा धर्म और शान्ति के लिए लगाई गई उच्च आवाज़ को मलिया मेट करने के लिए उस समय की संकीर्ण सोच वाले शासक तथा राजसी शक्ति तत्पर थी, वह चाहे हिन्दू बुरका पहन कर पहाड़ों में राज्य करते थे,

चाहे तुरक बुरका पहन कर दिल्ली के तख्त पर राज्य करते थे। गुरू महाराज जी ने फ़रमान किया कि हमारा किसी के साथ वैर भाव नहीं था, हम केवल मानव धर्म का मार्ग प्रचलित कर रहे थे। यह आवाज़ राजाओं को बहुत बुरी लगी क्योंकि वे धर्मी बन जाने वाली तथा अपने अधिकारों की पहचान करने वाली प्रजा की बहादुरी से डरते थे। गुरू महाराज जी फ़रमान करते हैं कि जब हम पांवटा साहिब में निवास कर रहे थे, उस समय पहाड़ी राजा इकट्ठे हुए और फतह चन्द राजा जो श्री नगर में राज्य करता था उन सभी राजाओं को साथ लेकर, बिना किसी कारण के हम पर आक्रमणकारी बन कर आया, उस समय आप सभी धर्मों के साहित्य की, शुद्धरूप में, आध्यात्मवाद के प्रकाश में रचना कर रहे थे। फ़रमान है –

फते साह कोपा तबि राजा। लोह परा हम सो बिनु काजा।

बचित्र नाटक

युद्ध हमारे ऊपर थोपा गया, हम कभी भी यह नहीं चाहते थे कि किसी पर भी आक्रमणकारी बना जाए और उसका राज्य छीन लिया जाए। हमारे सामने और कोई चारा नहीं था क्योंकि शान्तमय रह कर अत्याचार सहन करने की सीमा वाले गुरू तेग बहादुर साहिब, परदादा गुरू (गुरू अर्जुन देव जी) कितने घिनौने जुल्म सह चुके थे। इन जालिमों के सामने हाथ पर हाथ रख कर शहीद हो जाना कोई महत्व नहीं रखता था क्योंकि शान्ति की सीमा समाप्त हो चुकी थी। महान गुरूओं को दिये गये कष्ट अब सहन शक्ति को समाप्त कर रहे थे। वे सभी शक्तियों के मालिक होते हुए फिर भी मनुष्य शक्ति की सीमाओं में रहते हुए जालिमों के अन्धे नेत्र खोलने के लिए बलिदान दे गये। कोई भी व्यक्ति युद्ध नहीं चाहता। सभी शान्ति एवं सुख चाहते हैं पर जब कोई पेश ही न चले तो अपनी रक्षा के लिए शस्त्र हाथों में उठा लेना, अपनी पूरी कोशिश करना, अपने जैसे विचारों के लोगों को एकत्रित करके, दुष्टता को दूर करने के लिए यदि शस्त्र का उत्तर शस्त्र से दिया जाए तो कोई अनुचित बात नहीं हुआ करती। बल्कि धर्म यह मांग करता है कि कायरों की तरह गर्दनें कटवाने से कोई लाभ नहीं, बहादुरों की तरह अपने बलिदान दीजिए। गुरमत सारे विश्व का भला मांगती हुई प्रार्थना करती है कि हे वाहिगुरू! इस जलते हुए संसार की रक्षा कर, जिस द्वार से वह पार हो सकता है वहीं से ही कृपा करके पार करा दे। ऐसी विशाल फिलासफी के होते हुए किसी के साथ विरोध का प्रश्न ही नहीं उठता –

फरीदा बुरे दा भला करि गुस्सा मनि न हढाइ।
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ॥ ***पृष्ठ - 1381***

इस प्रकार गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज का सारा जीवन दुष्टताई का सुधार करते हुए और सच के प्रकाश के लिए यत्न करते हुए व्यतीत हो रहा था। अपने समस्त प्राचीन साहित्य को रूपमान करने के लिये 52

कवि तथा 50 लेखक अपने दरबार में रखे हुये थे। मंगल कवि को महाभारत के पर्व का अनुवाद करने के लिए उस समय का 60,000 रूपया दिया गया और इतने उपहार दिये जिन्हें मंगल कवि के घर तक पहुँचाने के लिए दो सौ जवानों को साथ भेजा।

गुरू महाराज जी पर लगभग 14 बार आक्रमण किया गया। सत धर्म के रक्षक, खालसा के वजूद में जाग्रत हो उठे। सूरमाओं ने सदा ही इन्हें हार दिलाई। वैसे वे बेपनाह फौजों के मालिक थे, युद्ध के हथियारों का कोई अन्त नहीं पा सकता था। गुरू महाराज जी के प्यारे गुरसिख अपने सीमित साधनों के साथ औरंगजेब के महान साम्राज्य तथा 22 धार के पहाड़ी राजाओं के साथ सत्य की ओट लेकर जूझते रहे। अन्त में समस्त भारत की राजसी शक्ति जिसमें 22 धार के पहाड़ी राजा, औरंगजेब की बेपनाह फौज और संघर्ष के भ्रम में पड़े उलटी मति वाले लुटेरे जिनकी संख्या दस लाख के करीब बताई जाती है वे इस महान युद्ध में सम्मिलित हुए। दूसरी ओर गुरू महाराज जी के पास न तो भोजन के विशाल भण्डार थे, न ही शस्त्रों का बहुत बड़ा कोई भण्डार था। ओट थी तो सत्य की थी। दोनों दलों का कोई मुकाबला नहीं था पर गुरू महाराज जी का जो वाक्य था कि –

चिड़ियों से मैं बाज तुड़ाऊं। सवा लाख से एक लड़ाऊं।

यह प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे रहा था, 6 महीने या इससे भी अधिक समय का घेराव था। गुरू साहिब के किलों में अन्न तथा शस्त्रों का भण्डार सीमित रूप में रह गया था। खालसा फौज़ ने वृक्षों के पत्ते उबाल उबाल कर पीये, वृक्षों की छालें, आटे के अन्दर मिला मिला कर खांई। लम्बा घेराव होने के कारण घेरा डालने वाले भी घबरा गये थे, उन्होंने विश्वास दिलाया और औरंगजेब द्वारा हस्ताक्षर की गई चिट्ठी पवित्र कुरान शरीफ के साथ रख दी। पहाड़ी हिन्दू राजाओं ने महा पवित्र पुस्तक गीता थाल में रखी तथा उसी थाल में गाय की प्रत्तिमा रखी गयी तथा प्रण किया गया कि हम गीता की तथा गाय की आन रखते हुए सौगन्ध खा कर अपने दिल की सच्चाई प्रकट करते हैं कि यदि आप किला छोड दें तो आपका जहाँ मन चाहे वहाँ रह सकते हो। इस प्रकार कुरान शरीफ वालों ने कुरान शरीफ की कसम खाई तथा कुरान शरीफ को साक्षी मानकर कहा कि हम हज़रत मोहम्मद साहिब की कलाम वाली इस पवित्र पुस्तक की साक्षी देकर आपको किला छोड़ने के लिए प्रार्थना करते हैं कि आप आनन्दपुर छोड़ दें। जहाँ आपका मन चाहे जा सकते हैं, आपको कुछ नहीं कहा जायेगा। गुरू महाराज जी अच्छी तरह से समझते थे कि यह फरेबी लोग न तो भगवान को मानते हैं, न ही धार्मक आदमी हैं, ये तो अपने हित के लिए धर्म की जड़ें काट रहे हैं। इसलिये पहाड़ी राजाओं का गीता की गवाही देना और कुरान शरीफ वालों का कुरान शरीफ की कसम खाना

एक फरेब (धोखा) था, एक ढीठता थी। गुरू महाराज जी ने सिखों की प्रार्थना सुनकर किला खाली कर देने का मन बना लिया। वैसे आप जानते थे कि ये भेषी मोमन तथा देवी भक्त अन्दर से खोखले हैं। इनका कुरान शरीफ का मानना तथा देवी देवताओं को मानना केवल अपने स्वार्थ के लिए ढोंग रचना है। गुरू महाराज ने यह दर्शाया कि अपने धर्म ग्रन्थों का आदर तो सारा विश्व ही करता है पर दूसरों के धर्म चिन्हों का आदर करना भी महान पुरुषों का कर्तव्य हुआ करता है। गुरू महाराज जी ने उनका आदर कायम रखते हुए 20 दिसम्बर 1704 अनुसार 6 पौष सम्वत 1761 की आधी रात को वहाँ से जाते समय 7 पौष दिन बुद्धवार को किला खाली कर दिया। धन्य हैं गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज जिन्होंने दूसरे धर्मों की पुस्तकों का आदर करके बताया कि परमेश्वर की बाणी चाहे अरबी में हो, चाहे संस्कृत में, चाहे किसी अन्य भाषा में हो, पूर्ण रूप में आदरणीय है। उस पर विश्वास करना एक बहुत बड़ी महानता है। किला खाली होते ही मक्कार हाकिमों ने न तो कुरान शरीफ की पवित्रता की परवाह की, न गीता तथा गाय की आन की परवाह की, अपनी सारी फौजें गिने चुने गुरसिखों के पीछे लगा कर हुक्म दिया कि घेरा डाल कर सभी को मार दिया जाये। एक भी आदमी गुरू गोबिन्द सिंह जी सहित सकुशल न निकल जाये। आनन्दपुर साहिब से लेकर सिरसा के किनारे तक यह भयानक युद्ध हुआ यहाँ एक और चमत्कारिक घटना का उल्लेख करना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगा।

7 पौष की अमृत बेला को सम्भालने के लिये आपने आसा जी की वार का कीर्तन आरम्भ करवा दिया। एक तरफ मार धाड़ हो रही है, दूसरी ओर वृत्तियाँ एकाग्र करके प्रभु प्यार का महान आत्म रस लूटा जा रहा है। उन्होंने शरीर की अपेक्षा हरि को याद करने के लिए किये जा रहे कीर्तन को पहल दी। दरिया सरसा चौड़े (खुले) किनारों में बहता है। पहाड़ों में वर्षा होने के कारण बहुत ही ठण्ड तथा धुन्ध हो गई, सरसा दरिया बहुत ही वेग के साथ अपने किनारों से बाहर निकल कर बह रहा है। ऐसा प्रतीत होता था कि आज सरसा दरिया ने भी महाराज जी के पवित्र कार्य में विघ्नकारी बनकर रास्ता रोकने की भूल की। इसीलिये गुरसिखों ने इस बहते हुए दरिया के पानी के ऊपर आज तक पाँच जूतियाँ मारना एक प्रकार का protest (विरोध) प्रकट करने का ढंग बना लिया है। इस स्थान पर घोर संघर्ष हुआ।

गुरू महाराज जी चार दिनों से उनींदरे थे तथा काफी थकावट हो चुकी थी। यहाँ साहित्य का काफी मात्रा में नुकसान हुआ जिसकी कमी कभी भी पूरी नहीं की जा सकती क्योंकि गुरू महाराज जी का 20-22 वर्षों का अनथक प्रयास, दिमागी निचोड़ पल भर में सरसा की भेंट चढ़ गया। पर धन्य थे गुरू महाराज जिन्होंने सभी कुछ वाहिगुरू जी की आज्ञा समझ कर सहन कर लिया।

गुरू महाराज जी यहाँ से चलते हुए 22 दिसम्बर प्रात: तक चमकौर साहिब की कच्ची गढ़ी जो एक हवेली जैसी थी, जो ऊँचे स्थान पर स्थित थी, में प्रवेश कर गये। सुबह ही अनगिनत फौज़ों ने आकर उस गढ़ी को घेर लिया। उस गढ़ी में गुरू महाराज जी के 40 मरजीवड़े सिख दो साहिबजादे

गुरू महाराज जी के साथ थे। सुबह ही युद्ध शुरू हो गया। दिन भर 25 सिख इस गढी में से बारी बारी निकल कर सवा लाख से एक लड़ने वाली गुरू इच्छा को साकार करते थे। न किसी को घबराहट होती थी। गढ़ी में से मीलों तक एक विशाल लश्कर नज़र आता था। ऐसे लगता था जैसे फौजों की बाढ़ आई हुई हो और सारे ही गढ़ी तक पहुँचने के लिए एक से एक जल्दी में हों। 25 सिखों ने दोपहर तक युद्ध किया। सूर्य छिपना शुरू हो गया। वे पुर्जा पुर्जा कट कर शहादत प्राप्त कर गये पर कमाल यह था कि कोई भी बुज़दिल न हुआ तथा किसी ने भी शस्त्र न फैंके। अन्तिम सांस तक शस्त्र चलाते रहे। इसके पश्चात साहिबजादा अजीत सिंह जिनकी शारीरिक आयु 18 वर्ष

के लगभग थी, आप ने गुरू महाराज जी से आज्ञा मांगी कि पातशाह! मुझे भी अपना शरीर इस मानवता की रक्षा के लिए किये जा रहे महान यज्ञ रूपी युद्ध में जूझ कर सफल करने की आज्ञा दीजिए। गुरू महाराज जी ने प्रसन्नता

साहित आज्ञा दे दी, स्वंय हाथों से शस्त्र सजाए, साहिब अजीत सिंह घोड़े पर सवार हुए और पाँच सिख लेकर इस ठाठें मारते शत्रु दल में आकर दाखिल हो गये। उस समय के प्यार से भरे, कवि योगी अल्ला यार खां ने ऐसे रूपमान किया है -

गोबिन्द के दिलदार किले से निकल आए।
वहु देखीए सरकार किले से निकल आए।
घोड़े पै हो असवार किले से निकल आए।
ले हाथ में तलवार किले से निकल आए।
किआ वसफ हो उस तेग का इस तेगे जुबान से।
वहु मिआन से निकली नहीं निकली येह वहां से। *शेअर ७८*

साहिब अजीत सिंह जी की शस्त्र विद्या को देख कर शत्रु भी वाह! वाह! कर रहा है क्योंकि इतनी फुर्ती से तलवार चल रही थी, काट रही थी कि नजरें भी देख नहीं पाती थीं। बिजली के वेग से कम इनकी चाल नहीं थी। इनके बारे में भी इसी कवि ने लिखा है -

'तलवार सी, तलवार थी किआ जानीए किआ थी।
खुंखार थी, खूंन बाज थी आफत बला थी।
थी आब या फौलाद पै बिजली की जला थी।
'यम राज' की अम्मां थी वहु शमशेर कज़ा थी।

अरदल मैं बिचारे 'मलकल मौत' खड़े थे
अपने शुगले खास मैं मशगूल बड़े थे। शेअर ८८
(पुस्तक सफरनामा ते जफरनामा में से धन्यवाद सहित)

ये पाँचों सिख कई घंटो तक युद्ध करते रहे। उस समय पहले पहल एक ऐसी बात हुई कि पहाड़ी राजाओं, नवाब तथा मुगल फौजों के जरनैलों ने साहिबजादे की कला को देखने का हुक्म दे दिया। ये 6 सिख हैं। एक-एक सिख के साथ एक-एक योधा यद्ध करो। कायर तो पीछे हट गये, अल्लाह का शुक्र करते हुए। पर बहादुरी के घमण्ड में आने वाले बारी बारी सामने आते रहे। इतिहास बताता है कि इन 6 ने 150 के करीब जालिमों को सदा की नींद, तलवार के स्पर्श से सुला दिया। उस समय सारे नियम तोड़ते हुए दुष्ट फौज के जवान इन पर टूट पड़े। साहिबजादा अजीत सिंह जी अकेले ही बहुत दूर तक युद्ध करते हुए निकल गये। अन्त में इस प्रकार एक अति दुर्गम घेरे में फंस जाते हैं जैसे अभिमन्यु महाभारत के युद्ध में चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए महान किले बन्दी में फंस गया था पर बाहर न निकल सका। साहिबजादा अजीत सिंह जी की तलवार टूट गई और केवल सन्जोह (कवच) पहने हुए मुगल सिपाही को बरछी मारी। वह कवच को चीर कर हड्डियों में जाकर फंस गई और शस्त्रविहीन होकर शहीद हो गये। वह अपने पवित्र शरीर का बलिदान देकर अमरापुरी में प्रवेश कर गये। उनके युद्ध ने गढ़ी में शेष रहते सिखों को बहुत ही उत्साह प्रदान किया।

जो सिख बाकी रह गये थे उनमें साहिबजादा जुझार सिंह 14 वर्ष के गुरू दशमेश पिता जी के लाड़ले पुत्र भी थे, वह आगे बढ़े और उन्होंने कहा कि ''पिता जी! मेरा प्यारा भाई शहादत प्राप्त कर चुका है, मैंने उससे पीछे नहीं रहना। चाहे मेरी शारीरिक आयु बहुत कम है पर आप द्वारा बख्शी गई शक्ति से मेरे अन्दर अथाह बल प्रवेश कर गया है। मुझे भी युद्ध लड़ने की आज्ञा दें।'' गुरू महाराज जी ने पीठ पर थपकी दी और छोटे छोटे शस्त्र कमरकसे में सजाये। छोटी कमान तथा तलवार देकर, पितृ प्यार दिया। घोड़े पर सवार होकर पाँच सिख साथ दिये और कहा ''बेटा! आज न्याय तथा अन्याय का युद्ध है, यह हमारे शहीद हो जाने से समाप्त नहीं हो जायेगा। यह काफी लम्बा युद्ध है। अधर्म पर विजय प्राप्त करनी है, जाओ! तुम भी इस महान कार्य में अपने शरीर की आहुति डालो।'' प्यारे! कितना हृदय विदारक दृश्य है। जिसे हमने देखना तो क्या था, सुन भी नहीं सकते। प्यारे पिता जिसने कोई मुल्क राज्य आदि हड़प नहीं करना था, न ही किसी की जायदाद लूटनी थी, केवल दुखियों के दु:ख दूर करने के लिए, संसार में न्याय की स्थापना के लिए अपने सारे सुख दाव पर

लगाये हुए थे, आज उनका प्यारा पुत्र 14 वर्ष का, महान जंग में प्रवेश करने वाला है। पिता के नेत्रों से जल नहीं बह रहा। आप प्रसन्न होकर पीठ पर शाबाशी ठोक रहे हैं, गले से लगाकर, छाती से लगाकर प्यार करते हैं, माथा चूमा, शाबाशी दी और कहा कि इस आज़ादी के संघर्ष में तू भी अपनी आहुति दे। संसार में जो आया है उसने जाना ही है। तू वह पदवी प्राप्त कर, जहाँ बड़े बड़े यती, योगी, दानी नहीं पहुँच सकते। उस सारी अवस्था को योगी अल्लाह यार जी ने अक्षरों में रूपमान करते हुए अंकित किया है –

'भराई सी आवाज़ मै बोले गुरू गोबिन्द सिंह।
पाला है तुमें नाज़ से बोले गुरू गोबिन्द सिंह।
रोका नहीं आगाज़ से बोले गुरू गोबिन्द सिंह।
इस नन्हे से जान बाज़ से बोले गुरू गोबिन्द सिंह।
लो! आउ तन पाक पै हथिआर सजा दें।
छोटी सी, कमां-नन्ही सी तलवार सजा दें। शेअर १०४
(पुस्तक सफरनामा ते जफरनामा में से धन्यवाद सहित)
लो! जाउ सिधारो तुम्हे करतार को सौंपा।
मर जाउ-या-मारो! तुम्हे करतार को सौंपा।
रब्ब को न बिसारो! तुम्हे करतार को सौंपा।
सिक्खी को उभारो! तुम्हे करतार को सौंपा।
वाहिगुरू अब जंग की तुम्हे हिंमत बखशें।
पिआसे हर जात जामें शहादत तुम्हे बखशें। शेअर १०६
(पुस्तक सफरनामा ते जफरनामा में से धन्यवाद सहित)

सूर्य छिपने तक इस छोटे वजूद ने वह कमाल करके दिखाया, जिसकी सदियों तक प्रशंसा होती रहेगी। हम तुलना नहीं कर सकते पर एक बात कहने में कोई कोताही नहीं होगी कि श्री राम चन्द्र जी की लंका में चढ़ाई के समय लक्ष्मण जी मूच्छत हो गये। उस समय श्री राम चन्द्र जी का विरह का जो चित्र रामायण में खींचा गया है, उस समय श्री राम चन्द्र जी ने तो वैरागमय होना ही था, पढ़ने वालों के नेत्रों से अश्रु धाराएं बहने लग जाती हैं। इसी प्रकार अभिमन्यु के युद्ध में शहीद हो जाने के बाद, पाँचो पाण्डव श्री कृष्ण जी महाराज के ढांढस बंधाने पर भी शान्त नहीं होते, बच्चों की तरह वियोग में रो रहे हैं। वशिष्ट जी, जो श्री राम चन्द्र जी के आध्यात्मिक गुरू थे, सौ पुत्रों के मरने का वियोग न सहन करते हुए सतलुज में प्राण त्यागने के लिए आये, और दरिया सौ धाराओं में होकर बहने लग गया तथा सहस्त्राद्रव कहलाया। पर धन्य थे गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज, आपकी उस समय की अवस्था को रूपमान करते हुए इसी कवि ने लिखा है -

याकूब को यूसफ के बिछड़ने ने रुलाइआ,
साबर कोई कंम ऐसा रसूलूं मै है आइआ।
कटवा के पिसर चार इक आंसू न गिराइआ,
रुतबा गुरू गोबिन्द सिंह ने रिशीओं का बड़ाइआ।

(पुस्तक सफरनामा ते जफरनामा में से धन्यवाद सहित)

एक अन्य प्रेमी शेरे पंजाब के सम्पादक स. अमर सिंह ने इस घटना का उल्लेख अपनी कविता द्वारा किया है -

उठती जवानीउं को लुटा कर चले गए,
सीने मैं आरजूएं दबा कर चले गए।
चमकौर मैं न बूंद बी पाणी की मिल सकी,
खूंने जिगर से पिआस बुझा कर चले गये।
भूखे थे रात के, शाहा हर दो जहां के लाल,
वाह हसरतां कि तीर ही खा कर चले गए।
फरिआद है कि बाप की आखों के साहमने,
दोनों जवां सिर अपना कटवा कर चले गए।
ऐह आसमां! वहु कौण थे? आ कर जो धर मैं,
बारे सितम सिरों पर उठा कर चले गए।
उठती जवानीउं की उमंगें हज़ार हा,
मिट्टी मैं आप ही वहु मिला कर चले गए।
थी मुनतज़िर बरात फरिशतों की अरश पर,
ज़ोरावर जो सिहरे बंधा कर चले गए।

सातों समुंदरों से बुझाई न जा सके,
ऐसी दिलों मैं आग लगा कर चले गए।
आए थे कारे ज़ार मुबबत मैं दे के जान,
मिहरो वफा का ऐहद निभा कर चले गए।
सुंदरी के लाल शेरे दिलवार अजीत सिंह,
कुशतूं के पुशते रण मैं लगा कर चले गए।
मनसूर इन पै रहिमतें परवरदगार की,
उजड़ा हूआ वतन जो बसा कर चले गए।

युद्ध रुक गया। गुरू महाराज जी के साथ 11 सूरमा शेष रह गये, 29 वहीं पर शहीद हो गये। गुरू महाराज जी के विचार दर्शन के अनुसार काल अवश्य आता है। गिने चुने श्वांस पूरे होने के पश्चात शरीर छोड़ कर जीव चला जाता है। जैसा कि फ़रमान है –

डणि घाले सभ दिवस सास नह बढन घटन तिलु सार।
जीवन लोरहि भरम मोह नानक तेऊ गवार॥ *पृष्ठ - 254*

जो कहूं काल ते भाज कै बाचयत तौ चहु कुंट बिखे भज जयै।
आगे हूं काल धरे असि गाजत छाजत है जिहतो नस अयै।
ऐसो न कै गयो को ऊसु दावरे जाहि उपाव सो घाव बचयै।
जाते न छूटीऐ मूड़ कहूं हस ताकी न किउं सरनागत पयै।

गढ़ी को घेरा डालने वाले नामी सरदार जिनकी शूरवीरता की धांक भारत वर्ष में मानी जाती थी वे थे नाहर खां, हैबत खां, इस्माईल खां, उस्मान खां, सुलतान खां, ख्वाजाखिज़र खां, जहान खां, जबरदस्त खां, नज़ीब खां, मीयाँ खां, दिलवार खां, सैद खां, वज़ीद खां, गुलबेग खां आदि। गुरू महाराज जी के महान सूरमा आलम सिंह, मान सिंह, दया सिंह, मोहकम सिंह आदि एक से एक बढ़ चढ़ कर थे। अब रात हो चुकी थी, सिखों ने सोच विचार कर प्रस्ताव पास किया तथा पाँच प्यारों के रूप में गुरू महाराज जी के पास प्रार्थना की कि आप इस युद्ध में से चाहे शक्ति का प्रयोग करके, चाहे मानवीय ताकत का प्रयोग करके, जैसे भी हो, बाहर चले जाओ और पंथ की पुनः रचना करो। बार बार प्रार्थना करने पर आपने प्रार्थना स्वीकार कर ली जो एक हुक्मनामे के रूप में थी।

गुरू महाराज जी ने भाई संगत सिंह जी को, जो हू-ब-हू गुरू महाराज जी के स्वरूप से मिलते जुलते थे, अपने स्थान पर बिठाया, अपनी पोशाक पहना दी। उस समय आपने वचन किया कि पाँच सिख पीरों के पीर, गुरू के स्वरूप, मेरे साथ अभेद रहेंगे। जब तक उच्च आदर्शों से गिरावट नहीं हो जाती, मैं पन्थ खालसा की रक्षा करूँगा –

पन्थ खालसा खेती मेरी। करहूं संभाल मै तिस केरी।

उस समय गुरू महाराज जी ने भाई संगत सिंह जी को अपना धनुष तथा कई सौ तीर सौंपे और कहा कि आप यहाँ बैठ कर धीरे धीरे तीर छोड़ते रहना। भाई राम सिंह, केहर सिंह, सन्तोख सिंह, देवा सिंह, इन चारों को चारों बुर्जों में बिठाकर धीरे धीरे बन्दूकें चलाते हुए और जीवन सिंह मज़हबी, काठा सिंह रविदासिये को नगाड़ा बजाने का हुक्म दे दिया। भाई दया सिंह, धर्म सिंह, मान सिंह इन तीनों सहित दीवार तोड़कर गढ़ी के छोटे द्वार से निकल कर शाही लश्कर में शामिल हो गये। गुरू महाराज जी ने उस समय चोरी छिपे निकल कर जाने को अच्छा न समझा। शूरवीरता के नियमों को और मानवता के अति उच्च आदर्शों को सन्मुख रखते हुए ऊँची आवाज़ में कहा कि 'हिन्द का पीर जा रहा है।' अन्धेरी रात थी, हाथ को हाथ भी दिखाई नहीं देता था, फौज आपस में ही लड़कर मर गई। गुरू महाराज जी माछीवाड़े पहुँचते हैं वहाँ उच्च के पीर होकर चारपाई पर बैठ कर माछीवाड़े से बाहर निकल जाते हैं पर पाँच हजार फौज ने घेरा डाला हुआ था, उन्होंने यह सन्देह करते हुए कि कहीं गुरू गोबिन्द सिंह जी न हों, इन्हें रोक लिया। दूसरे दिन काज़ी पीर मोहम्मद सलोह वाले, जिसने गुरू महाराज जी को फारसी पढ़ाई थी, को बुलाया गया। सैयद इनायत अली नूरपुरिया, सैयद हसन अली मोठू माजरिया बुलाये गये। इन्होंने कहा कि 'पीरान पीर' जा रहे हैं, तुमने बहुत बुरा किया इन्हें रोक कर। तुमने कामल पीर जी का अपमान किया है जो अल्लाह की दरगाह में भी माफ नहीं होगा। गनी खां, नबी खां साथ थे। उस फौजी अफसर ने याचना की, गुरू महाराज जी की पलंग की सवारी पाँच कोस की दूरी पर जाकर नीचे रख दी। इस प्रकार चलते हुए

आप राय कल्ले के पास रायकोट पहुँचते हैं। राय कल्ले ने जिस समय गुरू महाराज जी का सारा हाल सुना, उस समय उसने बहुत ही वैराग किया। गुरू महाराज जी ने छोटे साहिबजादों की खबर लाने के लिए माही को सरहन्द भेजा, उसने आकर सारा हाल रो रोकर बताया। साहिबजादों तथा माता जी की शहीदी के बारे में सुनकर राय कल्ला तथा अन्य लोग जो गुरू महाराज जी की हजूरी में बैठे थे उनके नेत्रों से इतना जल बह चला कि रूकने में ही न आता। गुरू महाराज जी ने कहा वाहिगुरू जी की नेत है, जिसे हम भावी कहते हैं, यह तो जो कुछ होना है, वह होकर ही रहता है, चाहे छोटा हो या बड़ा, भावी होकर ही रहती है। उस माही ने बताया कि सच्चे पातशाह! आपके पास रहने वाला सेवादार गँगू खेड़ी वाला, बेईमान हो गया और उसने जो धन माता गुजरी जी के पास था वह छिपा लिया। इतना ही नहीं बल्कि मोरिन्डे खबर भेज कर माता जी तथा साहिबजादों को गिरफ्तार करवा दिया। उस समय सभी श्रोताओं के समक्ष माही ने कहा कि दोनों साहिबजादों तथा माता जी को बिना कोई कम्बल कपड़ा दिये, पहने हुए कपड़ों सहित ही बुर्ज में कैद कर दिया, जहाँ पर हवा से बचने के लिये भी कोई सहारा नहीं था। माता जी की गोदी में साहिबजादे जिनकी आयु 5-7 वर्ष की बताई जाती है, वह लेटे हुए थे तथा माता जी के साथ बातचीत कर रहे थे, ''माता जी! पिता गुरू जी का क्या हाल है, भाई कहाँ होंगे? हम यहाँ कहाँ आ गये हैं?'' माता जी उन्हें सुखमनी साहिब की बाणी सुना कर समझा रही थीं कि ''बेटे! संसार में धर्म की रक्षा करना सबसे बड़ी चीज़ है। संसार में से जाना तो सभी ने है पर अपने धर्म पर शहादत दे देना, यह महान जीवन के सौभाग्य में ही हुआ करता है।

तुम्हारे पिता की चादर बेदाग है। मुझे नहीं लगता कि ये हमें छोड़ देंगे। हो सकता है हमें ये इस्लाम धर्म अपनाने के लिए कहें। तुमने अपने पिता की चादर पर दाग नहीं लगाना और साबत कदम रह कर संसार से जाना है।'' साहिब जोरावर सिंह ने कहा, ''माता जी! परमेश्वर तो एक ही है, वह स्वंय ही पसर रहा है जैसा कि आपने अभी पढ़ा था -

पारब्रहम के सगले ठाउ।
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ।
आपे करन करावन जोगु।
प्रभ भावै सोई फुनि होगु।
पसरिओ आप होइ अनत तरंग।
लखे न जाहि पारब्रहम के रंग।
जैसी मति देइ तैसा परगास।
पारब्रहमु करता अबिनास।

सदा सदा सदा दइआल।
सिमरि सिमरि नानक भए निहाल॥ *पृष्ठ - 275*

अज्ञान के कारण यह जीव हउमै रोग से ग्रसित, वाहिगुरू जी से टूट कर जीव उपाधि धारण करके दुखी हो रहा है। सभी धर्म यही बताते हैं कि समरथ गुरू द्वारा ज्ञान प्राप्त होने पर यह वाहिगुरू जी का ही रूप हो जाता है। इस्लाम, आर्य धर्म, गुरमत मार्ग सभी एक ही हैं फिर मृत्यु का डर दिखाकर ये खींच तान क्यों करते हैं?

माता जी ने कहा, ''पुत्रो! यही बात तो गुरमत समझाती है। प्रहलाद को उसका पिता हरिणाक्ष प्रभु भक्ति से जबरदस्ती मौत का भय दिखा कर हटाता था पर प्रहलाद के दिव्य नेत्र खुले होने के कारण उसे हर घट में प्रभु ही दिखाई देता था। प्रभु ने उसकी रक्षा की। बच्चो! सभी प्रसार की आत्मा एक ही है, एक ब्रह्म हर जगह है। वह स्वंय ही अनेक रूप धारण करके अपनी खेल खेल रहा है। आपके पिता जी ने फ़रमान किया है -

एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक।
खेल खेल अखेल खेलन अंत को फिर एक॥ *जापु साहिब*

यहाँ जन्मता मरता कुछ भी नहीं। सभी जगह निरंकार की ज्योति अनेक रूपों में खेल कर रही है जैसे -

जिमी जमान के बिखै समसति एक जोत है।
न घाट है न बाढ है न घाटि बाढि होत है॥ *अकाल उस्तति*

संयम तथा मर्यादाहीन जीवन मुर्दा है, केवल नामी ही जीवित है

क्योंकि उसके अन्दर से अज्ञान का खातमा हो गया। ये लोग महा अन्धकार में हैं। ये कहते हैं अपना धर्म छोड़कर हमारा धर्म अपना लो, यह इनकी महान भूल है। मौत का भय दिखाते हैं। ज्ञानी को पता है कि आत्मा सदा सदा जीवित है, मौत उसके अन्दर है ही नहीं। वे अपने नियमों पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं और शरीर का बलिदान देने से कभी भी संकोच नहीं करते। तुम्हारे दादा गुरू जी ने हिन्दुओं के धर्म, तिलक तथा जनेऊ की रक्षा करते हुए महान साका किया। शीश दे दिया पर अपने नियम

नहीं छोडे, उनके दादा जी, गर्म गर्म तवी पर बिठाये गये, पानी के अन्दर उबाले गये पर कोई शाप देने की बजाये, प्रभु की रज़ा को, इच्छा को मीठा समझते हुए महान बलिदान कर गये। बेटे! प्रत्येक बलिदान मुर्दा हो चुके समाज में ज्ञान तथा नरोयापन पैदा करता है। इसलिये डरना नहीं। शीश यदि जाता है तो चला जाये पर सत्य धर्म को कभी भी भय, लालच में आकर त्यागना नहीं। तुम्हारे दादा जी, तुम्हें लेने आ रहे हैं, अमरापुरी में हम सभी ने जाना है। तुम्हारे पिता जी एक बिचित्र नाटक कर रहे हैं, सर्व कला समरथ हैं, एक फुरना कर देने से सभी कुछ नष्ट भ्रष्ट कर दें, पर यहाँ एक ही वाहिगुरू सभी जगह परिपूर्ण है, शाप किसे दें। इसलिए वह कष्ट उठाकर भी अति उच्च सूक्ष्म गुणों को उभार रहे हैं। उन्होंने आदर्श मनुष्य, जिस में और प्रभु में कोई भेद नहीं, उसे खालसा आदर्श का धारणी बना कर अति उत्तम मनुष्य 'खालसा' के रूप में सृजन किया है। अपने

पिता के महान बडप्पन गौरव को मौत के भय का दास नहीं बनाना बल्कि हंसते हंसते मौत को गले लगाना है। इसी मृत्यु में से ही अमर जीवन प्रकट होता है।''

दूसरे दिन छोटे साहिबजादों की नवाब सरहन्द की कचहरी में पेशी होती है, उस समय दर्जा-ब-दर्जा सारे जरनैल, नवाब कचहरी में उपस्थित थे। साहिबजादों की निर्भय अवस्था, मासूमियत तथा प्यार दृष्टि जो बगैर किसी घबराहट के थे, चेहरे मुस्करा रहे थे, उन्हें देखकर बहुत से लोगों को अपने पुत्र याद आ गये और कई तो अपने अपने दिलों में यह कह रहे थे कि इन बच्चों ने क्या कसूर किया है कि इन्हें कोई सजा दी जाये? उस समय नवाब ने कहा कि तुम्हारे पिता कल मार दिये गये हैं, तुम्हारे भाई भी चमकौर के युद्ध में मारे जा चुके हैं। अब तुम मासूम हो, बूढी दादी तुम्हारे साथ है। तुम पर हमें बहुत दया आती है। हम चाहते हैं कि तुम काफिरों का धर्म छोड़ कर महान इस्लाम धर्म धारण कर लो। उसी समय दोनों भाई एक दूसरे की ओर देखते हैं तथा स्व:मान के भाव चेहरे पर प्रकट करते हुए कहते हैं -

श्री सतिगुर जो पिता हमारा।
जग महि कौन सकहि तिह मारा॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ 5952

वह तो स्वंय ही सर्व कला समरथ हैं, कौन दुनियाँ में पैदा हुआ है जो उन्हें मार सके। आकाश को कौन मार सकता है, आन्धी किसी के रोके जाने से नहीं रुकती, पहाड़ों को कौन चलायेमान बना सकता है, सूर्य चन्द्रमा के वेग को कौन रोक सकता है? हमारे पिता जी तो धर्म चलाने के लिए और दुर्मति को नष्ट करने के लिए इस संसार में पधारे हैं।

इतने वाक्य सुनकर सारी कचहरी में बैठे व्यक्तियों में साहिबजादों की निर्भयता को देखकर हैरानी छा गई, उस समय काज़ी बोला, ''बच्चो! कचहरी में आकर जयकारा (फतह) नहीं बुलाया करते, इसके विपरीत झुक कर सात बार सलाम की जाती है और उसने झुक कर दिखाया। उस समय फिर एक दूसरे के मुँह की तरफ देखा और कहा कि हम जानते हैं कि किस के आगे सिर झुकाया जाता है। कोई परमेश्वर का, अल्लाह का प्यारा मिल जाये तो हम झुकना तो एक तरफ रहा उसके चरणों की धूलि की भी लालसा करते हैं। हमें पता है किसका मान किया जाता है। उन अल्लाह के प्यारों के सामने झुकने से अल्लाह की रहमत प्राप्त होती है। हमारे शीश पवित्र हैं क्योंकि हमारे अन्दर अल्लाह का वास है, इसीलिये हम प्रभु प्यारों के आगे झुक सकते हैं। पामरों, लुटेरों, झूठे, काफिरों के आगे हमारा शीश कभी भी नहीं झुक सकता।

याद रखो दशम द्वार में प्रभु का निवास है वहाँ उसकी पूर्ण ज्योति जगती है। तुम अल्लाह के प्यार से रिक्त, वंचित हो, मुर्दे हो। तुम्हारे अन्दर जीवन धारा नहीं रूमक रही, इसलिये हम तुम्हारे सामने क्यों झुकें? उस समय आवाज़ आई कि ये बच्चे बिल्कुल भी नहीं डरते। कारण पूछा गया। बच्चों ने कहा कि डरता वह है जिसने कोई गुनाह किया हो, पाप किया हो, जो अल्लाह की मर्जी के उलट हो। हम तो सर्वस्व का भला चाहते हैं। हमारे पिता जी भी यही कहते हैं। तुम हमला करने जाते हो, जीने का अधिकार छीनते हो, यदि हम तुम्हारा सामना करें तो तुम इसे गुनाह (पाप) मानते हो। यह गुनाह कैसे हुआ?

हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिंदुड़ीए
सो डरै जिनि पाप कमते राम।
जिसु अंतरु हिरदा सुधु है मेरी जिंदुड़ीए
तिनि जनि सभि डर सुटि घते राम। *पृष्ठ - 540*

उस समय अति क्रोधित होकर एक सुच्चा नन्द नाम का खत्री कचहरी में बैठा था। उच्च पद तथा सभी नियमों को तोड़ता हुआ क्रोधित होकर बोला कि ''देखो! समझो! नाग के बच्चे अपने मुँह से अमृत नहीं निकाला करते। ये भी नागों के बच्चे हैं, नागों के बच्चों को समाप्त करने में भी अल्लाह पाक की खुशी है।'' उस समय नवाब ने ध्यान से सुना और बच्चों को

सम्बोधन करते हुए कहा कि ''बच्चो! अभी तुम्हें राजसी मर्यादाओं का पता नहीं है पर हम चाहते हैं कि तुम कुफ्र का मजहब छोड़ दो तथा दीने इस्लाम में आकर इसकी शरा को मान लो, तुम्हारा हम पूरे प्रबन्ध के साथ पालन करेंगे। तुम्हें उच्च पदों पर लगायेंगे। नबाबों की लड़कियों के साथ तुम्हारे विवाह करवायेंगे और हम तुम्हें पीर मान कर तुम्हारा सम्मान करेंगे।''

उस समय दोनों साहिबजादों ने कहा कि नवाब साहिब! हमारा जो धर्म है वह सम्पूर्ण है, धर्म धारण का अर्थ अल्लाह पाक के साथ मिलाप हुआ करता है। उसका दीदार करना होता है, उसमें फिनाह-फिलाह अवस्था में अभेद होना हुआ करता है। जिसने अल्लाह को प्राप्त कर लिया उसका यहाँ पर आना सफल है। सो गुरू नानक का बताया गया मार्ग आत्म मार्ग है, जिस में किसी प्रकार का कोई विरोध नहीं, सभी सांझीदार कहलाते हैं। संसार की वलगण (घेरा) इतनी सांझी है कि सारा संसार एक ही अंक में समा जाता है। आप इस्लाम की बात करते हो, क्या तुम कुरान शरीफ को मानते हो? यदि यह कहते हो कि मानते हैं तो यह बिल्कुल गलत है। तुम न तो किसी नेकी को मानते हो, न किसी दीन को मानते हो, तुम काफिर हो, मोमन नहीं हो, तुमने हमारे पिता जी के सामने कुरान शरीफ़ की गवाही देकर तथा पहाड़ी राजाओं ने गीता तथा गाय की साक्षी देकर कहा कि तुम किला खाली कर दो, हम तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएंगे। पर तुमने तो कुरान शरीफ की भी धज्जियाँ उड़ा दीं। तुम्हारे से बढ़कर बड़ा काफिर कौन है जिसने धर्म ग्रन्थ की साक्षी देकर स्वंय ही नहीं माना? हमें भी ऐसे काफिरों के समूह में दाखिल करके शरा मनवा रहे हो। याद रखो, जिसने पैगम्बर के द्वारा आये अल्लाह के कलामों को नहीं माना, उस काफिर को दरगाह में स्थान नहीं मिलेगा, नरकों में फैंक दिया जायेगा और वहाँ कष्ट सहने पड़ेगें।

फरीदा मउतै दा बंना एवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा।
अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा॥ ***पृष्ठ - 1383***

इस संसार में कोई भी सदा नहीं रहा। यदि तुम अपने ही इतिहास को ध्यानपूर्वक पढ़ो, तुम देखोगे कि तुम्हारे ही पिता, पितामह कहाँ चले गये। अकबर का बहुत नाम था, दीनदार था। हमारे पिता जी बताते हैं कि वह भ्रमों से न्यारा होकर गुरू अमरदास जी के पास आर्शीवाद लेने आया तथा पंगत में बैठकर संगत की तरह लंगर में बैठा तथा भोजन किया। उसके राज्य के समय क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या काफिर सभी इन्सान माने जाते थे। किसी के साथ भेद भाव नहीं हुआ करता था। तुम तो उस जाग्रत ज्योति को बुझाने का यत्न कर रहे हो जो यह बताती है कि इन्सान

इन्सान ही है, उसे मजहबों की रंगत में बांटा नहीं जा सकता। चाहे हिन्दू है, चाहे मुसलमान है सभी का दिल स्व: मान के साथ जीने की कामना करता है। काफी समय के पश्चात स्वतन्त्र जीवन मिला है। उसकी स्वतन्त्रता छीन ली जाये तो अल्लाह ताला कितना नाराज़ होता होगा, इसका तुम्हें वार-ए-गा खुदा में जाकर पता चलेगा। वहाँ पर जब सजायें भोगोगे फिर सिवाय रोने, कुरलाने के और कुछ भी नहीं मिलेगा। तुम हमारे पिता जी को समझ ही नहीं सके। वह कहते हैं कि चाहे कोई राफज़ी है, चाहे सन्यासी, जोगी है, पीर है, आलम है, उलमा है, चाहे कुछ भी है, है तो वह इन्सान ही। सभी के शरीरों को पाँच तत्वों से बनाया है, वही नेत्र हैं जिनके द्वारा प्रत्येक मनुष्य देखता है, वैसे ही सभी के कान हैं, वैसे ही उनके बोल हैं। वैसे ही शरीर के स्वभाव हैं - किसी में नफज़ अधिक है, कोई नफज़ से परहेज़गार है। सभी का एक ही स्वरूप है, इन्सान कैसे बांटा जायेगा? हमारे पिता जी इन्सान को मज़हबों में डाल कर बाँटने को अज्ञानता बताते हैं। जितना सम्मान हिन्दू मन्दिरों को, देहुरे को, शिव मन्दिर को, ठाकुर द्वारे को देते हैं उतना ही सम्मान मस्जिद को देते हैं। वाहिगुरू सभी का एक ही है, कोई उसे अल्लाह कहता है, कोई राम कहता है, कोई रहीम कहता है, सभी उसी एक को प्यार करते हैं, एक को प्यार करके बन्दगी करते हैं, एक ही स्वरूप समस्त विश्व में परिपूर्ण है। एक ही ज्योति सभी को सत्ता देकर कर्म करवा रही है। तुम यह तो बताओ कि हमारे जैसे दीन से शरा मनवाकर तुम्हें क्या फ़र्क पड़ जायेगा? अमृत बेला में हम उठ बैठते हैं, अपने शरीर को जल से पवित्र करते हैं, फिर सभी के राज़क, प्यारे अल्लाह का ध्यान करते हैं, उसका नाम जपते हैं, संसार को हम उसका रूप जानकर प्यार करते हैं क्योंकि हमें ज्ञान दिया गया है कि यह सारी सृष्टि एक ही नूर से अस्तित्व में आई है। गुरबाणी हमें बार बार समझाती है कि देखना, कहीं भूल न जाना, खालक खलकत में है वह हर जगह हर अच्छे, बुरे मनुष्य के अन्दर परिपूर्ण है, हर एक के अन्दर दशम द्वार में उसका वास है। तुम देखो न! एक ही मिट्टी से कुम्हार कितने बर्तन बना देता है, बर्तनों में अनेक प्रकार की वस्तुएं रखी हैं। जैसी किसी में वस्तु पड़ी हुई है वैसी ही निकलती है पर मिट्टी तो एक ही है न। निष्कर्ष यह है कि तुम्हारे अन्दर भी और हमारे अन्दर भी एक ही अल्लाह की ज्योति है और उसका किया हुआ ही उसकी आज्ञा अनुसार हो रहा है उसे ही हम मानते हैं। जिसने उस हुक्म को पहचान लिया उसे इन्सान कहा जा सकता है। जब तक मुरशदे कामल के पीछे नहीं चलता तब तक अल्लाह को देखने वाले पाक (पवित्र) नेत्र नहीं खुला करते। नवाब साहिब! यह हमारी समझ में नहीं आ रहा

कि तुम कौन सी शरा की बातें कर रहे हो, तुम न तो कुरान शरीफ को मानते हो, न ही उसमें दी गई हिदायतों को मानते हो, तुम्हारा कानून कैसा है जो बेकसूरों को मारने पर तुला हुआ है। तुम यह बात तो बताओ, हमारे पिता जी ने, हमारी माताओं ने, हमारे भाईयों ने क्या कसूर किया है? हमें बन्दी बना कर बे-सिर-पैर की बातें तुम कर रहे हो। इस सभा में हमें कोई भी सच बोलने वाला दिखाई नहीं दे रहा। सभी द्रोग-गो (झूठे) ही इकट्ठे होकर बैठे हो। बे-इन्साफी पर तुले हुए हो, तुम हमें कहते हो झुक कर सलाम करो, नवाब साहिब! सच के सामने झुका जाता है, झूठ के सामने कोई नहीं झुकता। झुकना वह होता है जो अन्दर से झुका जाये। हमारे गुरू फ़रमान करते हैं कि शीश झुकाने से कुछ नहीं हुआ करता जब तक आन्तरिक दिल साथ न दे। ये सारे भाव गुरू महाराज जी की कृति में प्रकट होते हैं -

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोई जोगी भइओ
कोई ब्रहमचारी कोऊ जतीअनु मानबो।
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम शाफी,
मानस की जात सबै एकै पहचानबो।
करता करीम सोई राजक रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो।
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक,
एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो।
देहरा मसीत सोई पूजा औ निवाज ओई,
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है।
देवता अदेव जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू,
निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है।
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान,
खाक बाद आतम औ आब को रलाउ है।
अलह अभेख सोई पुरान ऐ कुरान ओई,
एक ही सरूप सबै एक ही बनाउ है॥ *अकाल उस्तति*

अवलि अलाह नूरु उपाइआ कुदराति के सभ बंदे।
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे।
लोगा भरमि न भूलहु भाई।
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई।
माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै।
ना कछु पोच माटी के भांडे न कछु पोच कुंभारै॥
सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई।
हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई॥ *पृष्ठ - 1350*

इन बातों का नवाब के पास कोई जवाब नहीं था और न ही दुष्ट चौकड़ी के पास कोई जवाब था। उन्हें एक मीठी पर सच्ची झाड़ इन छोटे से बच्चों ने डाली। उनके अन्दर कुछ घबराहट हुई पर पाप करते करते अन्दर इतना पक गया था, पथरा गया था कि थोड़े बहुत प्रकाश में उन्हें होश नहीं आ सकती थी। वे ला-इलाज आदमी थे। उनका एक ही इलाज था कि उनके जीव आत्मा को इस शरीर में से छुड़ा कर गले हुए शरीर को खत्म करना ही था। यदि कैंसर हो जाये तो डाक्टर दूर दूर तक मांस काट देते हैं, जहाँ तक उन्हें सन्देह होता है कि उसकी जड़ें फैल चुकी होती हैं। सारी कचहरी में बैठे लोग हैरान थे। बहुत वचन हुए, सवाल जवाब हुए, आखिर उन्हें माता गुजरी के पास वापिस भेज दिया गया। बाद में सलाह की गई कि जब तक ये माता के पास हैं, माता ने इन्हें दलेरी और दृढ़ता देते ही रहना है, इन्हें माता से अलग कर दिया जाना चाहिए। साहिबजादा जोरावर सिंह तथा फतह सिंह ठण्डे बुर्ज की सीढ़ियों पर चढ़ रहे हैं। माता जी पहले से ही इन्तज़ार कर रही थीं। दोनों बच्चों को छाती के साथ लगाकर प्यार किया और कहा, मेरे लाल! मुझे तुम अति प्रसन्न चित्त नज़र आ रहे हो। आप पूर्ण योगी हो, जिन्होंने हानि-लाभ, सुख-दुख, निन्दा उस्तुति, आशा निराशा को एक समान जान लिया है। तुम्हारे पिता जी ने तुम्हें रूहानी ज्ञान बख्शा है। मुझे लगता है कि इन ज़ालिमों ने तुम्हारे साथ जरूर बदसलूकी की होगी पर तुम समवृत्ति धारण करके दु:ख सुख से पार हो गये। मेरे लाल! बताओ तो सही क्या हुआ? उस समय बारी बारी कभी फतह सिंह, कभी जोरावर सिंह बताते हैं कि ''माता जी! वे हमें इस्लाम की शरा में बदलना चाहते थे,'' उपयुर्क्त लिखे जा चुके जवाबों को उन्होंने पुन: दोहराया। माता जी अति प्रसन्न हुए और कहने लगे बेटा! शरीर क्षण भंगुर है, जो पैदा हुआ है, वह नष्ट हो जायेगा पर सच्चाई ने सदा मनुष्य के साथ जाना है। मौत से डर कर अपने इरादे, निश्चय बदल लेना कायरता है। जो यहाँ यश कमा जाते हैं उनकी याद सदा ही बनी रहती है। वे प्रकाश स्तम्भ बनकर भूले भटके बेबस हो चुके लोगों को रास्ता दिखाते हैं। आज कुछ खाने को भी नहीं मिला, बच्चे कोई उलाहना भी नहीं दे रहे, पर आँख बचाकर एक प्रेमी कुछ दूध दे गया था। दोनों साहिबजादों ने एक एक घूंट पीया। वाहिगुरू का धन्यवाद किया कि तू सभी का दाता है जैसे कि -

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई॥ पृष्ठ - 2

साहिबजादों ने बताया कि ''माता जी! उन्होंने कहा कि तुम्हारा पिता शहीद हो चुका है, उन्होंने बड़े भाईयों के बारे में भी बताया कि उन्हें हमारी फौजों ने मैदाने जंग में धराशाही करके फैंक दिया।'' हमने कहा

कि वह क्षत्रिय धर्म की पालना करते हुए सचखण्ड में निवास कर गये हैं। यह मत कहो कि मारे गये हैं। दुष्ट लोग मरा करते हैं, सन्त सदा ही जीवित रहते हैं। उन्होंने अपने स्वरूप को पहचान लिया होता है। आत्मा न कभी मरती है, न पैदा होती है, न कहीं से आती है, न कहीं जाती है, यह तो एक खेल चल रहा है। माता जी ने भी साहिबजादों के मुख से सुना कि साहिबजादा अजीत सिंह और जुझार सिंह शहीदी प्राप्त कर चुके हैं। कई बार मन में विचार आया कि यदि हम गुरू महाराज जी को किला खाली न करने के लिए कहते तो यह विपदा, अत्याधिक परेशानी न उठानी पड़ती। अभी ये वचन कह ही रही थीं कि सिपाही आये, साहिबजादों को माता गुज़री से अलग कर दिया। माता जी ने उन्हें जाते हुए कहा कि तुमने पर-परदादा गुरू अर्जुन पातशाह की शहीदी को याद रखना है तथा अपने दादा जी का वृतान्त जो दिल्ली में हुआ, सदा ही याद रखना है। अपने कुल की रीत है, शीश जाता है तो चला जाये पर मौत के भय से कुल को दाग नहीं लगने देना। चाहे शहीद हो जाओ पर माँ की कोख को दाग न लगने पाए। पिता की चादर पर स्याही का एक धब्बा भी नज़र न आए। वे साहिबजादों को ले जाते हैं।

दूसरे दिन फिर पेशी होती है। आज इकट्ठ बहुत अधिक हो गया और बच्चों के बारे में फैसला सुनने के लिए काफी खलकत आई हुई है। बहुत से अन्दर से रो रहे हैं, पर बाहर से दिखाई नहीं देते। आज फिर कल की तरह सलाम करने का हुक्म हुआ। आपने कहा कि हम प्रभु के रंग में रंगे हुए सन्तों की चरण धूलि को मस्तक पर लगा सकते हैं, हम लालसा करते हैं कि ऐसे प्यारों की धूलि हमें मिले। झुकना तो एक ओर रहा, हम तो झूठे लोगों के दर्शन भी नहीं करना चाहते। हमारे पिता सभी कुछ जानते थे कि तुमने एक थाल में गीता तथा गाय की पवित्र पोथी रख कर तथा दूसरे थाल में एक कुरान शरीफ की पवित्र पुस्तक रख कर एक दगा कर रहे हो, छल कर रहे हो, पर हमारे पिता ने यह बात स्पष्ट की कि यदि हम कुरान की पवित्र पुस्तक की आन नहीं बचाते, गीता की आन नहीं रखते तो कौन रखेगा? तुम्हारे धर्म को कितना महत्व दिया पर तुम द्रोग-गो (झूठे) हो। पहले वाला प्रश्न फिर दोहराया गया। साहिबजादों ने फिर अपने विचार दोहराये। सभा में आज मुगल, पठान, वज़ीर, योद्धा, जरनैल भी बैठे थे तथा कचहरी से बाहर बहुत भारी इकट्ठ था। इस सभा में हिन्दू खत्री भी थे, क्षत्रिय भी थे, व्यापारी भी थे और शहर के बहुत से निवासी भी थे। कुछ बैठे थे, कुछ खड़े थे, मोरिण्डे वाले पठान भी बैठे हैं। उनमें से एक सुच्चा नन्द नाम का खत्री जो नवाब का दीवान खास वह भी अति क्रोधित होकर बच्चों को घूर घूर कर देख रहा था। यह चन्दू दीवान के खानदान में से था।

नवाब ने कहा, बच्चो! तुम्हें कल भी समझाया था, तुम तुर्की शरा को मान लो, हम तुम्हें बहुत बड़प्पन देंगे। तुम्हारा पालन पोषण बड़े अमीरों की तरह किया जायेगा। जब तुम जवान होगे, उस समय घोड़े रथ तथा बेअन्त धन तुम्हारे पास होगा। मैं तुम्हें अपने निकट रखूंगा। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा अच्छी तरह पालन पोषण किया जाये और तुम्हें कई गाँव गुज़ारे के लिये दिये जायें। तुम्हें फौजों का जरनैल बना दिया जायेगा। उस समय जोरावर सिंह के चेहरे पर एक प्रकार का रोष प्रकट हुआ, लाली की तपस चेहरे पर छा गई तथा नेत्र देखने से प्रतीत होता था कि उनके अन्दर एक बहुत बड़ा protest (विरोध) है। उस समय फतह सिंह ने कहा, ''भ्राता! जैसे अपने पितामह ने धर्म की रक्षा की और संसार में महान यश कमाया, तीनों लोकों में जय जयकार हो रही है, हमें भी इसी तरह से शहीदी दे देना ही उचित है।'' लिखा है -

हम तुम को तिम की बनि आवै।
सिर दिहु तुरकनि मूल गवावैं।
हिंदू धरम जाग है फेर।
तन सभि नाशवंत ही हेरि॥ ३६॥

दीन बिखै लयावन के हेत।
कहयो पितामे को बहु देति।
धरम धुरंधर धीरज धारी।
इन कहिने पर पनही मारी॥ ३७॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ 5952

फिर कहने लगे उन्होंने धर्म का साका किया, शीश दे दिया पर अपने इरादे पर दृढ़ रहे। इसी प्रकार हम भी दृढ़ता के साथ यह साका करें। अपना जो वंश है श्री राम चन्द्र जी महाराज तथा माता सीता जी की परम पवित्रता पर चला आ रहा है, बेदी कुल तथा सोढी वंश उस महान पवित्र वंश की शाखाएं हैं। जैसे वृक्ष की जड़ धरती में रह जाती है, पर उसकी टहनियाँ, पत्ते, फूल, फल बाहर दिखाई देते हैं सो अपने गौरव को पहचानें और साबत निश्चय सहित शहीदी दे दें। भाई सन्तोख सिंह जी ने लिखा है -

तिन शाका जग तुम दिखरावो।
मन को थिर करि नहीं डुलावो।
सरब शिरोमणि बंस हमारा।
राखहु तिस की लाज उदारा॥ ३८॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ - 5952

जब छोटे भाई फतह सिंह से यह उत्तर सुना तो उस समय उसने कहा कि ऐसे झूठों की शरा हमें मन्जूर नहीं है, अपने धर्म को हम बिल्कुल भी नहीं बिगाड़ सकते और कहा कि हमारे वंश की यह रीत चली आ रही है, शीश तो हम दे दिया करते हैं पर धर्म नहीं छोड़ा करते। भ्राता फतह सिंह! ये पापी बज्र पाप करने पर तुले हुए हैं, अपने खून की एक एक बूँद इनके राज्य की जड़ें उखाड़ देगी।

पापी के मारने को पाप महां बली।

सुने अनुज ते धीरज बैन।
कहयो जोरावर सिंह रिस नैन -

शरा सीस हम पनही मारैं।
धरम आपनो नहीं बिगारैं॥ ३९॥
हमरे बंस रीति इन आई।
सीस देति पर धरम न जाई।
तुमरी जरां उखारनि हेत।
हम नहिं डरपहिंगे सिर देति॥ ४०॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ 5952

कहने लगे हमें क्यों भरमाते हो, तुम झूठे लालच देकर हमें भ्रमित करते हो? ये तो संसार में ही छोड़ जायेंगे। संसार मंच पर बड़े बड़े आए, उन्होंने मन मर्ज़ी की, आखिर मिट्टी की मुट्ठी बन कर चले गये। इनकी तो बात ही छोड़ें, बड़े बड़े अवतार, पीर, औलिए, गौंस कोई भी संसार में नहीं रहता। हमारे पिता जी फ़रमान करते हैं –

एक शिव भए एक गए एक फेर भए,
राम चंद्र कृष्ण के अवतार भी अनेक हैं।
ब्रहमा अरु बिशन केते बेद औ पुरान केते,
सिम्रिति समूहन के हुइ हुइ बिताए हैं।
मोनदी मदार केते असुनी कुमार केते,
अंसा अवतार केते काल बस भए हैं।
पीर औ पिकांबर केते गने न परत एते,
भूम ही ते हुइ कै फेर भूम ही मिलए हैं॥ *अकाल उस्तति*

जोगी जती ब्रहमचारी बडे बडे छत्रधारी
छत्र ही की छाइआ कई कोस लो चलत हैं।
बडे बडे राजन के दाबत फिरति देस
बडे बडे भूपन के द्रप को दलतु हैं।
मान से महीप औ दिलीप के से छत्रधारी,
बडो अभिमान भुज दंड को करत हैं।
दारा से दिलीसर द्रजोधन से मानधारी,
भोग भोग भूम अंत भूंम मै मिलत हैं॥ *अकाल उस्तति*

ये पदार्थ तो यहीं पर ही रह जायेंगे। तुम्हारे में से ही आकर एक महमूद ने भारत को लूटा, अनेक जुल्म किए, बहुत धन लूटा, क्या वह साथ ले गया? हमारे आदि गुरू ने काँरू बादशाह को समझाया था और कहा था –

दमड़ा तिसी का जो खरचै अर खाइ।
देवै दिलावै रजावै खुदाइ।

होता न राखै अकेला न खाइ।
तहकीक दिलदानी वही भिसत जाइ॥ *नसीहतनामा*

प्यारे! क्यों गलती करते हो, दरगाह में केवल धर्म ने साथ जाना है, कौन मूर्ख है जो कि दरगाह में शूमन्दा होकर संसार के झूठे पदार्थों के साथ प्यार डाले। याद रखो, हमने शीश दे देने हैं। तुम्हें पता है कितना भयानक तूफान आयेगा? तुम्हारी जड़ें हिला कर रख देगा। तुम वह पाप करने लगे हो जिसे किसी भी कानून का विधान प्रवान नहीं करेगा।

उस समय सुच्चा नन्द बड़े क्रोध से बोला कि मैं भी खत्री जात में से हूँ। देखो, मैं भी इनके साथ चलता हूँ, कितना बड़ा पद मुझे मिला हुआ है, बालको! तुम झूठी बातें मत करो। उस समय साहिबजादा जोरावर सिंह ने कहा, तू भ्रष्ट हो चुका क्षत्रिय है, हमारे पूवर्जों ने कहा है -

खत्रिआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही।
स्त्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही॥

पृष्ठ - 663

तुम्हारा धर्म था अपने देश की रक्षा करना, विदेशियों ने आकर देश की इज्जत लूटी और स्त्रियों का मान लूटा, तुम्हें तो जीवित ही मर जाना चाहिए था क्योंकि खत्री वह होता है -

खत्री सो जु करमा का सूरु। पुंन दान का करै सरीरु।
खेतु पछाणै बीजै दानु। सो खत्री दरगह परवाणु।

पृष्ठ - 1411

हम सिर कुर्बान करने के लिये तैयार हैं, धर्म हमने बिल्कुल भी नहीं छोड़ना। उस समय उस झूठा नन्द ने नवाब की ओर देखा जो चुप चाप सोच रहा था, कुछ हमदर्दी तथा कुछ न्याय की किरण उसके अन्दर से निकल कर कुछ प्रकाश देने वाली थी। उसने कहा कि ''नवाब साहिब! ये बालक दूध-मुँहे नहीं हैं, बिल्कुल भय नहीं मानते। यदि बड़े हो गये अपने पिता से भी अधिक खतरनाक निकलेंगे। ये नागों के बच्चे अभी ही दबा दिये जाने चाहिए।''

दीवारों में चिनवा कर मौत की सजा सुना दी गई। माही के इस कहने को उर्दू के एक शायर ने बाद में इस प्रकार लिखा है -

जान ले लेने के फतवे लग रहे थे इक तरफ,
शौक बे प्रवाह के डेरे लग रहे थे इक तरफ,
रख लीए मां बाप ने सीने पै पत्थर इक तरफ,
चुंन रहे थे संग दिल लालों पै पत्थर इक तरफ।

था तने नाज़क पै गिरता ईंट पत्थर इक तरफ,
कर रहे थे देवता फूलों की बरखा इक तरफ।
इक तरफ काज़ी के फतवे, साहज़ादे इक तरफ,
ईंट पत्थर इक तरफ, आहनी इरादे इक तरफ।
जिंदगानी इक तरफ, मरने के सामान इक तरफ,
इक तरफ आलम की खुशीआं और ईमान इक तरफ।
धरम ईमां इक तरफ, रुहलत हकूमत इक तरफ।
सुबाह सादक इक तरफ, शामे जहालत इक तरफ।
माहे पारे इक तरफ, तारीक बादल इक तरफ,
जिसम नाजक इक तरफ, समशीर कातल इक तरफ।
रूए इनसान इक तरफ, खूंनी निगाहें इक तरफ,
इक तरफ थे कुहके, लोगों की आहें इक तरफ।
इक तरफ मासूम बच्चे और ज़मानां इक तरफ,
दिल को बेगानां न करना, ऐहले दिल का इक तरफ।

साहिबजादे दीवार में चिने गये, पर दीवार ने उन्हें अपने अन्दर स्थान न दिया, दीवार का हृदय फट गया, ईंटें इधर उधर बिखर गई, ठण्ड से बेसुरत हुए बच्चे धरती पर ही गिर गये। इतने में दो जल्लाद आये, उन्होंने बच्चों की छातीयों पर घुटने रख कर उनकी गर्दनें काट दीं जिसे सुनना और कहना भी बहुत कठिन है।

माता जी को जब पता चला उस समय आपने परमात्मा का धन्यवाद किया कि मेरे पौत्र बहादुरों की तरह जूझ गये हैं, सिर दे दिया पर धर्म नहीं छोड़ा। माता जी पूर्ण योगिनी थीं क्योंकि गुरू तेग बहादुर साहिब जी जब बाबा बकाला में तप कर रहे थे, उस समय आप तपोस्थान के द्वार के सामने पहरा देती हुई, अनेक प्रकार की साधनाएं कर रही थीं। जैसे माता जीतो जी ने अपनी मर्जी से शरीर में से प्राण पंखेरू उड़ा दिये, उसी तरह से माता जी ने अकाल पुरुष के चरणों में ध्यान लगाया। गुरू तेग बहादुर जी की याद साक्षातकार हुई और ब्रह्म रून्ध्र खोलकर प्राण पंखेरू उड़ा दिये। गुरू महाराज जी का फ़रमान है -

गुरमुखि आवै जाइ निसंगु॥ *पृष्ठ - 932*

गुरू घर में अनेक उदाहरण हैं, जब गुरसिखों ने अपना शरीर अपनी मर्ज़ी से छोड़ दिया तथा छोड़ने के पश्चात फिर अपनी मर्जी से प्रवेश कर गये।

गुरू दशमेश पिता जी ने बहुत ही दृढ़ इरादे के साथ माही से, जिसे खबर लेने के लिये सरहन्द भेजा गया था, छोटे साहिबजादों की शहीदी सुनी। गुरू महाराज जी एक काहीं (सरकण्डे) के पौधे के चारों ओर सहज भाव ही छोटी कृपाण के साथ मिट्टी हटा रहे थे, आप एक दम सावधान हुए। क्या देखते हैं कि जितने भी सुनने वाले इकट्ठे होकर गुरू महाराज जी के चारों ओर बैठे हैं, सभी के नेत्रों से अश्रुओं की धाराएं बह रही हैं, किसी में भी बोलने की समर्था नहीं है, गले सूख गये हैं, राय कल्ला भी आसुओं से भरी चुप, मौन में बैठा है। अचानक इस मौन को भंग करते हुए गुरू महाराज जी ने फ़रमान किया कि माही! एक बात हमें बता कि जब साहिबजादों को यह घोर कष्ट की सजा नीवों में चिने जाने वाली सुनाई गई, क्या उस सारी सभा में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने विरोध किया हो और आह का नारा लगाया हो? उस समय माही ने कहा कि पातशाह! जब मौत की सजा सुना दी गई उस समय नवाब ने मलेर कोटला वालों को यह बात कही कि लो, यह शत्रु के बालक तुम्हारे हवाले करता हूँ, तुम अपने भाई जो गुरू गोबिन्द सिंह जी के हाथों चमकौर साहिब में मारा जा चुका है, का बदला ले लो। इन बालकों के शीश तलवार से उड़ा कर पूरी तरह से बदला लो।

उस समय मलेर कोटला भाई अपने आसनों से खड़े हो गये और कहने लगे नवाब साहिब! हमें कहते हो कि हम इन दूध मुँह बच्चों को मारें जिन्हें यह भी नहीं पता कि हित और अहित किसे कहते हैं। तुम्हारे बच्चे भी इन्हीं की उम्र के हैं, आप नहीं देख रहे? इन बच्चों ने क्या

कसूर किया है? इस उम्र के बच्चों को तो पिता मेले में गोदी में उठाकर मेला दिखाते हैं। नवाब साहिब! तुमने कसमें तोड़ीं, हम कुछ नहीं बोले पर अब जुल्म की सीमा पार हो गई है, तुमने पवित्र कुरान की तालीम को अन्धेरे कुएं में फैंक दिया है तथा घोर अन्याय के अन्धकार में मलीन बुद्धि करके, तुम इन दूध मुँह बच्चों को मौत की सजा दे रहे हो, नीवों में चिने जाने की सजा दे रहे हो, कितने भोले बच्चे हैं? कितने उत्तम विचार हैं? इनकी एक बात से भी प्रकट नहीं होता कि ये किसी के दुश्मन हैं। ये अल्लाह की जात को हर फरदो-बशर में देखने वाले जुस्से (शरीर) हैं। ऐसे मासूम बच्चों को मार कर धरती फट नहीं जायेगी? हम तुम्हारे इस घिनौने जुल्म से भरे नाटक में शामिल नहीं हो सकते। हम अलाह

तालाह को जानते हुए तुझे मना करते हैं कि यदि बदला लेना ही है तो गुरू गोबिन्द सिंह सभी के बीचों बीच में से निकल गया है, उस शेर के साथ दो हाथ करो। यह कायरों तथा डरपोकों का कार्य है कि बेकसूर बच्चों को मार कर बदला लिया जाये। हम दिल से तुम्हारे इस फैसले से कोई भी सहमति नहीं रखते और इस पाप के नाटक में भी हम अपना ऐतराज़ पेश करते हुए इस दुष्ट सभा को छोड़कर जा रहे हैं। ऐसा कहते हुए वे कचहरी से बाहर आ गये।

माही कहने लगा, ''पातशाह! ये शब्द सुनकर एक बार तो सारी कचहरी में सन्नाटा छा गया। नवाब भी सोचने लग गया पर उस दुष्ट खत्री ने जिसका नाम सुच्चा नन्द है पर शैतान का नाम झूठा नन्द है उसने अति

क्रोधित होकर कहा कि हम मलेर कोटले वालों की किसी बात से सहमत नहीं हैं। मौत का दण्ड देने से दुश्मन का हृदय पूरी तरह से गमगीनी में चला जायेगा। वह यदि हमारे हाथों में नहीं भी आयेगा तो भी उसे पुत्रों की मौत का गहरा सल (वियोग) काट काट कर खायेगा। ये बच्चे बिल्कुल नहीं छोड़ने और न ही इनकी माता को क्षमा करना चाहिए। नवाब साहिब ने इन्हें नीवों में चिनवा देने का फैसला किया है हम उससे 100 प्रतिशत से भी अधिक सहमत हैं।

माही ने कहा, ''पातशाह! उस मन्द बुद्धि वाले के ज़हरीले बोल सुनकर सारी सभा का वातावरण बदल गया और कोई भी न बोला बल्कि नवाब के साथ सहमति प्रकट की।'' रो रो कर माही ने ये बातें बताईं। गुरू महाराज जी ने धैर्य बन्धाया।

इधर बात खत्म होती है उधर गुरू महाराज जी ने काईं का पौधा उखाड़ दिया और हाथ में लेकर सीधे बैठ गये। थोड़ी दूर फैंकते हुए फ़रमान किया कि जहाँ ऐसा कहर हो, वहाँ अल्लाह ताला पूरी तरह से सजा देता है। इस जुल्म ने मुगल राज्य की जड़ उखाड़ दी और यह कहते हुए काहीं का पौधा जड़ से उखाड़ कर दूर फैंक दिया। उस समय राय कल्ला जो इस्लाम का मानने वाला था उसने कहा, ''पातशाह! मैं भी मुसलमान हूँ। मैंने तो कोई जुल्म नहीं किया। मेरे खानदान पर कृपा करो।'' उस समय गुरू महाराज जी ने अपने गातरे की श्री साहिब देते हुए कहा ''तूने नेक कार्य किया है, तेरी जड़ तब तक हरी रहेगी जब तक तुम इस श्री साहिब का पूरी तरह से आदर करते रहोगे। जिस दिन तेरे बाद तेरी सन्तान के किसी भी बच्चे ने अपने गातरे में इसे पहन लिया उस समय तुम्हारी जड़ सूख जायेगी, पर मलेरकोटला वालों ने जो इन्सानियत वश होकर खुदा की हाजिरी को मानते हुए आह का नारा लगाया है, उन्होंने उसकी जड़ बचा ली है। यहाँ इनका राज्य होगा। उस समय उन्होंने इन्सानियत के शब्द जो साहिबजादों के लिये प्रयोग किए हैं, उसकी बदौलत हमारे ये वीर बहादुर सूरमा, इसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाएंगे और इनकी सन्तान काफी समय तक राज्य करेगी।''

सभी श्रोताओं की तरफ गुरू महाराज जी ने मुख करते हुए फ़रमान किया कि संसार में सदा के लिये कोई भी नहीं रहा, यहाँ पर धुर दरगाह के हुक्म अनुसार जीव आता है, चला जाता है, सभी के श्वांस गिन कर दिये जाते हैं। जब आखरी श्वांस आ जाता है फिर जीव संसार से चला जाता है। गिने हुए श्वासों में मोह की आस रखना मूर्खता हुआ करती है -

डणि घाले सभ दिवस सास नह बढन घटन तिलु सार।
जीवन लोरहि भरम मोह नानक तेऊ गवार॥ *पृष्ठ - 254*

यह पौष का महीना खालसा समाज के लिए शहीदियों का महीना

है जिसमें आनन्दपुर साहिब से चलकर हज़ारों सिखों ने अपना बलिदान दिया। साहिबजादे शहीद हो गये, उनकी निडरता तथा उनकी मौत के साथ जूझने की सूझ बूझ तथा धर्म की रक्षा के जज़बे ने लाखों कायर मनुष्यों के अन्दर एक जीवन की रौ (धारा) बहा दी तथा अनेकों ने मन ही मन में इस पापों से लद्दे राज्य के खातमें के लिए मन बना लिया।

गुरू दशमेश पिता जी की जो करनी है उसे समझना बहुत ही कठिन है। आपने अपने हित के लिए एक तिल भर भी नहीं सोचा। यदि सोचा तो केवल यह कि भारत वर्ष अपनी मूर्खता तथा धर्म से विपरीत होकर पतन की निम्न स्तर की सतह पर पहुँच गया है, एक तरह से जीवित ही मर गया। इन मुर्दो में जान डालने के लिए आपने महान अमृत की दात इन बेचारे बेसहारों को प्रदान की। एक ज्वार भाटा उठा। गुरू महाराज जी के जोती जोत समाने के पश्चात ही बन्दा बहादुर की योग्यता के नेतृत्व में इस जालिम राज्य की जड़ें हिला दीं तथा पंजाब के दोषियों, दुष्टों को पूरी तरह से सजा देकर संसार को यह बता दिया कि धर्म की सदा विजय होती है और अधर्म सदा ही विनाश की ओर ले जाता है। सिखों ने इन्हीं कुर्बानियों से प्रेरित होकर ऐसी लहर चलाई जिसका प्रत्येक कदम ही उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा था। चरखड़ियों पर चढ़ कर, रूईं की तरह धुने जाने, खोपड़ियाँ उतरवाने, अंग अंग कटवाये जाने, जीवितों के चारों ओर रूईं बान्ध कर जलाये जाने वाली घटनाओं ने इन मरजीविड़ों में वह स्वः मान पैदा कर दिया कि वे परतन्त्र होकर रहने को किसी तरह भी सहन नहीं कर सकते थे। साहिबजादों की जो दृढ़ता भरी शहीदी थी, उसने भारत वासियों के दिलों में से डर बिल्कुल ही समाप्त कर दिया, उनका स्वाभिमान जाग्रत हुआ और जुल्म का नाश कर दिया।

आज तुम एक महान अनुभवी उज्जवल कथा पढ़ रहे हो। प्यारे! यह बात समझो कि सारी शक्ति का स्त्रोत वाहिगुरू जी का नाम है, वाहिगुरू जी का ज्ञान है, गुरू के सिख के लिए मौत कोई चीज़ नहीं है यह तो ऐसे हैं जैसे पुराने वस्त्र उतार कर नये पहन लें, असली चीज़ जो हमें ध्यान में रखनी चाहिए, वह है कि अपना जीवन इतना उच्च बना लें कि जहाँ से तुम्हारे प्यार की फुंहार सारे जन समूह पर अमृत की वर्षा करे। तुम्हें कोई गैर न समझे, अपना समझ कर अपना ले। यह तभी हो सकता है यदि हमारे अन्दर यह निश्चय आ जाये कि हर घट में वाहिगुरू जी बसता है, सभी एक ज्योति से उत्पन्न हुए हैं और सभी आपस में एक इकाई हैं।

गुरू दशमेश पिता जी सारी मानवता के सांझे थे तथा वह सत्य आचार संसार में लाना चाहते थे जो सतयुग के मनुष्य में स्वतः ही सम्मिलित

थे। सतयुग का मनुष्य वाहिगुरू जी को हर स्थान पर देखता था पर इसके विपरीत कलयुग का मनुष्य मानवीय स्वभाव से पूरी तरह गिर चुका है और प्रेत की स्तर पर भड़थू (हो हल्ला) पा रहा है। त्रेता और द्वापर में मनुष्य, मानवता के स्तर पर था, पर उनके अन्दर हउमैं होने के कारण अज्ञानता का अंश बढ़ गया था और वह परिपूर्ण परमेश्वर के दर्शनों से वंचित रहने लग गये थे। गुरू दशमेश पिता जी के जो आदर्श हैं वे उस मनुष्य के हैं जिसे उन्होंने 'खालसा' कहा है जिसमें कोई धार्मक भ्रम नहीं है जिसके अन्दर मायिक भ्रमों की आन्धी प्रकाश में बदल चुकी है,

जिसके सेवक भाई घनईया जी की तरह, इस बात की पहचान ही भूल चुके हैं कि इस संसार में कोई वैरी भी है, उनके जीवन में से झलक दिखाई पड़ती है -

बिसरि गई सभ ताति पराई।
जब ते साधसंगति मोहि पाई।
ना को बैरी नही बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई॥
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ
एह सुमति साधू ते पाई॥
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै
पेखि पेखि नानक बिगसाई॥ *पृष्ठ - 1299*

उन्होंने गुरू ग्रन्थ साहिब जी की बाणी को अपने ऊपर पूरी तरह लागू करके दिखाया तथा वैर बदले की भावना, ओछी बातें, स्त्रियों की बेइज्जती

करने के ओछे कर्म, जीवन में से निकाल कर कूड़े की तरह बाहर फैंक दिये और सच की कैंची लेकर ईर्ष्या, निन्दा, चुगली, भय, अहिंसा की जड़ें उखाड़ कर अपने जीवन में से ये कोहढ़ बल पूर्वक बाहर निकाल कर फैंक दिया। आज संसार को ऐसे मानव की आवश्यकता है जो शत्रु के लिए कह सके कि भाई घनईया! तेरी नज़रें ठीक ही कार्य कर रही हैं, यहाँ संसार में एक ही प्रभु का हुक्म चल रहा है, तू अब बनावटी वैरियों को केवल पानी ही मत पिलाया कर, मरहम देता हूँ, पट्टियाँ देकर कहता हूँ तू पानी भी पिला उसके घावों में मरहम भी लगा और पट्टी भी कर ताकि शीघ्र प्रसन्न हो जायें। मैंने मनुष्य को नीचता से उठा कर पूर्ण मनुष्य बनाया था जिसे मैंने खालसा कहा जिसकी उपज प्रभु की इच्छा से हुई है।

वाहिगुरू सदा दयालु, कृपालु, रहीम, बख्सविन्द है उसका प्यारा यह सर्वत्र, वाहिगुरू जी के स्वभाव वाले गुण अपने जीवन में धारण करे तथा सारे संसार को प्रकाश स्तम्भ बनकर अन्धकार से बचाए। शक्ति का प्रयोग करना हमारा कर्तव्य नहीं था पर जब जिन्दा रहने के सभी साधन, तरीके समाप्त हो जायें, उस समय उस दरिन्दे को, शस्त्र हाथों में लेकर हुंकार कर, दुनियां से दूर कर देना पाप नहीं, इन्सानी अधिकार है क्योंकि जो दूसरों के जीवन बर्बाद करता है, वह मलेच्छ है, जो दूसरों को जीवन प्रदान करता है वह खालसा है, फरिश्ता है। मैं संसार के लोगों को फरिश्ते बनाने आया हूँ मैंने यह कार्य अपने परख किये हुए खालसे के सुपुर्द करके जाना है। मेरा 'खालसा' समस्त विश्व का ध्येय होगा तथा प्रमुख सरदार होगा। वह अपने वचनों द्वारा, अपने कर्तव्यों, अपनी सोच से, अपनी आत्मिक शक्ति द्वारा सदा ही सर्वत्र का भला चाहता हुआ वास्तव में ही धुर हृदय से कहेगा -

नानक नाम चड़दी कला तेरे भाणे सरबत का भला।

छोटी छोटी जानों द्वारा की गई कुर्बानी सदा ही नेकी पालन करने में उत्साहित करती रहेगी। ये ज्योतियां सदा के लिए अमर हैं, अमर ही रहेंगी।